प्रश्न (4) राजकमलक 'अपराजिता ' कथाक सारांश लिखू ।

उतर - राजकमल जी मैथिली साहित्यमे धूमकेतु जकाँ अवतरित भ' अपन व्यक्तित्व आ कृतित्वसँ सभकें प्रभावित क ' मैथिली कथा , कविता आ उपन्यासकें समृध्द करैत , अल्पायुमे संसार से उठि गेलाह ? मैथिली कविता आ कथामे ई नव मोड़ आनि देलनि ।

ओ नव मैथिली कवितामे , एखन धरि वैह मोड़ बनल अछि । हिन्दी साहित्यमे सभसँ अधिक प्रतिष्ठा यैह अर्जित कैलनि - उपन्यासकार , कवि, कथाकार ओ अनुवादक रूपमे। हिनक मूल नाम मणीन्द्र नारायण चौधरी आ जन्म 13 दिसम्बर 1929 कें भेल छलनि। हिनक पैतृक गाम सहरसाक जिलाक महिषी छलनि । बी० कॉम पास क पटना सचिवालयमे नौकरी कैलनि । मुदा बेसी दिन ई

Scanned by CamScanner

संचिका मे बान्हल नहि रहलाह । नौकरी छोड़ भ्रमण्शील भ गेलाह । नव- नव अनुभवसँ युक्त साहित्य रचना करैत रहलाल । प्रारम्भमे ई विवादास्पद साहित्यकारक श्रेणीमे रहला परंच बादमे हिनक रचनाक महत्व

आ सामाजिक यथार्थसँ अवगत भेला पर साहित्यकारक रूप मे आदरणीय भेलाह । प्रायः सभ रचनामे ई स्वंग अपन भोगल - देखल यथार्थ घटनाकेँ ल क रचना कैलनि।

अपराजिता कथा बिहारकेँ मिथिलांचलक उधाम नदी , बाढिक कथा थिक । कथाकार स्वयं अपन मित्र नागदत , दिवानाथक चिचिआएत बाजल देख मणि देख अपराजिताक ताण्डव । सत्ये कमला बलान, बागमती , गण्डक आ कोशी अपराजिता अछि । की ककरो सामर्थ्य नहि जे एकरा पराजित क ' सकय । चीनक कतेक भयानक से चीनक लेल वरदान बनि गेल ।

Scanned by CamScanner

मास्टर सेहो तंग कर ' लागल - " तुमलोग गारी खाली कर दो , वरना इंजिन तुमलोगो को गारी के साथ समस्तीपुर चला जायगा । वहाँ तुमलोगों को जेल हो जायगा , सरकारी गारी पर कब्जा जमाने के जुर्म में। " तखन बूढा सब आर आन्नो सभ बाजल नीके हैत जेलमे हमरा सभकें भोजन त' भेटबे करत ।

Scanned by CamScanner